ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

प्रबुधे न पुनस्कृधिः। यजुर्वेद 4/14
हे सकल्यशक्ति! हमें फिर से प्रबुद्ध कर जगा।
O Will power ! Do awaken us again from stumber.

वर्ष 38, अंक 47 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 5 अक्टूबर, 2015 से रविवार 11 अक्टूबर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में रोग मुक्ति यज्ञ संपन्न

रोग मुक्ति यज्ञ को लेकर बच्चों में विशेष उत्साह रहा, युवाओं ने भी सच्चे मन से दीं यज्ञाहूतियां

दिल्ली में प्रदूषण एवं डेंगू जैसी बीमारियों को खत्म करने हेतु सामूहिक यज्ञ का आयोजन

दिल्ली को प्रदूषण और डेंगू जैसी भयानक बीमारी से मुक्त कराने हेतु महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच;) एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिल्ली की आर्य समाजों द्वारा विभिन्न स्थानों पर यज्ञ-हवन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आर्य समाजों के अतिरिक्त दिल्ली के अन्य सामाजिक संगठनों ने भी महाशय जी के इस रोग मुक्ति यज्ञ कार्यक्रम की सराहना करते हुए इसमें भाग लिया जिसके परिणाम स्वरूप इस कार्यक्रम को लक्ष्य से अधिक उपलब्धि हासिल हुई।

दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर हुए रोग मुक्ति यज्ञ समारोहों में जहां बुजुर्गों की भागीदारी तो थी ही सर्वाधिक जोश व उत्साह महिलाओं और बच्चों में देखने को मिला। इससे ज्ञात होता है कि यज्ञ के प्रति लोगों में अपार श्रद्धा है।

...शेष पेज 4 पर

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद रिसर्च फांउडेशन कालीकट केरल का निर्माण कार्य आरम्भ

केरल, दिनांक 24 सितम्बर 2015 को एम.डी.एच. के संस्थापक महाशय धर्मपाल जी द्वारा स्थापित वेद अनुसंधान फाउंडेशन का निर्माण कार्य एक समारोह के अन्तर्गत आरम्भ हो गया है। कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के निदेशक आचार्य एम.आर. राजेश, एम.डी.एच. परिवार से श्री अनिल अरोड़ा जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने संयुक्त रूप में दीप प्रज्ज्वलित करके किया। समारोह में आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर, इ. नरेन्द्र नारंग व कालीकट के विभिन्न गणमान्य व्यक्ति, वेद मंडल से महिलाएं एवं बच्चे शामिल हुए।

गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् का द्वितीय वार्षिकोत्सव

दिनांक 25 अक्टूबर 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् (लघु गुरुकुल) दिनांक 25 अक्टूबर 2015 को अपना द्वितीय वार्षिकोत्सव का आयोजन आर्य समाज पंखा रोड सी ब्लॉक जनकपुरी नई दिल्ली में कर रहा है। कार्यक्रम विवरण पृष्ठ 8 पर देखें।

एकरूप यज्ञ प्रशिक्षण एवं अभ्यास कार्यशाला

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) की प्रेरणा से आर्य समाज कीर्ति नगर नई दिल्ली के सौजन्य से दिनांक 10 से 18 अक्टूबर 2015 को आर्य समाज कीर्ति नगर में एकरूप यज्ञ प्रशिक्षण व अभ्यास कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम के ब्रह्मा एम.आर. राजेश जी (कालीकट केरल) व सहयोगी आचार्य विवेक जी, आचार्य अरुण जी, आचार्य साजिथ जी, डॉ. ऋषिपाल शास्त्री जी होंगे। कार्यक्रम संयोजक श्री सतीश चड्ढ़ा जी हैं। भाग लेने वाले अभ्यार्थियों को एक समान गणवेश धारण करके स्वयं के यज्ञकुंड पर अभ्यास करना होगा। कुल 50 सदस्य ही मान्य हैं। पंजीकरण एवं प्रशिक्षण शुल्क 1000 रुपये है। **विशेष जानकारी के लिए सतीश चड्ढ़ा जी से संपर्क करें -मोबाईल नम्बर- 09540041414**

क्या सियासत बीफ खा गयी?

उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा के गांव बिसाहडा इखलाक नाम के शख्स की हत्या वाकई एक निंदा का विषय है जिसकी भारतीय संविधान इजाजत नहीं देता। खबर थी कि इखलाक अपने घर में गाय का मांस खा रहा है जिस पर कुछ लोगों ने मंदिर के लाउडस्पीकर से अन्य लोगों को भी बुला लिया और गौ माता की हत्या से गुस्साये लोगों ने इखलाक के साथ मारपीट की जिससे उसकी मृत्यु हो गयी, हालांकि हत्यारों को जेल और मांस को जांच के लिये भेज दिया गया है पर जिस प्रकार भारतीय मीडिया ने देश के साम्प्रदायिक सौहार्द का खेल बनाकर पूरे विश्व में प्रस्तुत किया वह कहीं न कहीं देश के लिए बेहद शर्मनाक है। ऐसा नहीं है कि इस तरह की अफवाह देश में पहली बार फैली और एक इखलाक की जान चली गयी अफवाह तो 26 जुलाई 2014 में सहारनपुर में एक मस्जिद की मीनार से भी फैली थी जिसे सुनकर दंगाईयों ने सुबह 7 बजे से सिखों की दुकानें जलाने और लूटने का काम शुरु किया और दोपहर 12 बजे तक लूटते रहे जिसमें पुलिस के एक जवान की पीठ में गोली मार दी गयी थी। 3 लोगों को जान गवानी पड़ी। 38 लोग घायल हुए सैंकडों दुकान लूटने के बाद आग के हवाले कर दी गयीं पर उस समय राजनीति और

...शेष पेज 6 पर

टक्कर मारो पर हैलमेट पहनकर
विशेष संपादकीय-पढ़े पृष्ठ 2 पर
12 वां आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन...
पढ़े पृष्ठ 6 पर
विभिन्न स्थानों पर रोग मुक्ति यज्ञ सम्पन्न
पढ़े पृष्ठ 4-5 पर

स्वाध्याय

मरणशील मनुष्यों का अमरदेव ही स्तुत्य

तमध्वरेष्वीलते देवं मर्ता अमर्त्यम्। यजिष्ठं मानुषे जने।। -ऋ.5/14/2
ऋषिः - **आत्रेय सुतम्भरः।।** देवता-**अग्निः।।** छन्दः-**विराड्यात्री।।**

शब्दार्थ - अध्वरेषु= सब यज्ञों में मर्त्ताः=हम मरणशील मनुष्य तं अमर्त्यं देवम्= उस अमर - कभी न मरने वाले-देव की ही ईलते= पूजा करते हैं। जो देव मानुषे जने=प्रत्येक मनुष्य के अन्दर यजिष्ठम्=यजनीय है।

विनय - नाना प्रकार के यज्ञों में जो हम विविध कर्म करते हैं, असल में हम उन सब कर्मो द्वारा उस अमरदेव का ही पूजन करते हैं। हम मरणशील मनुष्यों को अमरदेव के ही यजन करने की आवश्यकता है। प्रत्येक यज्ञ-कर्म का प्रयोजन यही है कि हम उस द्वारा मृत्यु से पार हो जाएं-अमर हो जाएं। यज्ञ मर्त्य को अमर बनाने के लिए ही है, पर हम यज्ञों द्वारा जिस अमरदेव की पूजा करते हैं, वह अमरदेव है कहां? सुनो, वह अमरदेव प्रत्येक मानुष जन में है, प्रत्येक मनुष्य में 'यजिष्ठ' होकर विद्यमान है। हमें प्रत्येक मानुष में उसका यजन करना चाहिए, इसीलिए कहा जाता है कि यज्ञ सब मनुष्यों के हित के लिए होता है। यज्ञ का स्वरूप परोपकार है- एक-एक मनुष्य का हितसाधन है। मनुष्यों की सेवा करना ही यज्ञ करना है। जितना हम मनुष्यों की सेवा करते हैं - मनुष्यों की पीड़ाओं और दुःखों को दूर करने के लिए निःस्वार्थभाव से यत्न करते हैं-उतना ही हमारे ये कार्य यज्ञ होते हैं। अग्निहोत्र द्वारा किये जाने वाले पुराने ऋतु-यागादि भी आधिदैविक-देवों की अनुकूलता प्राप्त करके मनुष्य-जनता के हित के प्रयोजन से ही किये जाते थे, पर इतने से भी यज्ञ का तात्पर्य पूरा नहीं होता। मनुष्यों की जिस किसी प्रकार की सेवा करने से यज्ञ नहीं हो जाता। हमें तो प्रत्येक मनुष्य में उस अमरदेव को ही यजन करना है। जिस सेवा से मनुष्य के अमरदेव की सेवा नहीं होती, वह सेवा, सेवा नहीं है; वह सेवा-यज्ञ नहीं है। भोगविलास की सामग्री जुटाने से बेशक मनुष्यों की तृप्ति होती दीखती है, परन्तु यह मनुष्यों की सच्ची सेवा नहीं है। ऐसा 'परोपकार' यज्ञ नहीं, अयज्ञ है। इसी प्रकार भूखों को इस प्रकार अन्न देना, रोगियों को इस प्रकार औषध देना भी, उनकी सच्च उन्नति में-उन्हें अमर बनाने में-बाधक होवे, यह भी यज्ञ नहीं , अयज्ञ है। इसी प्रकार भूखों में-उन्हें अमर बनाने में-बाधक होवे, यह भी यज्ञ नहीं है, अर्थात् जनता की भौतिक उन्नति साधना तभी तक यज्ञ है जब यह भौतिक उन्नति उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही हो। आध्यात्मिक उन्नति करना ही-दूसरे शब्दों में-मर्त्य से अमर बनना है। आओ, हम मर्त्य अमरदेव की पूजा करें, मनुष्य की ऐसी सेवा करने में अपने को खो देवें,जो सेवा उनके अमर बनने में सहायक हो।

साभार : वैदिक विनय
पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

टक्कर मारो पर हैलमेट पहनकर

5 अक्टूबर के समाचार पत्र में दो खबरें पढ़ीं - तीन नाबालिग लड़कियां रेड लाईट एरिया से छुड़ाई गयीं और दूसरी खबर थी कि दिल्ली के रेड लाईट एरिया जी.बी.रोड में 1.68 लाख निरोध मुफ्त वितरित किये गये। महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल की ओर से इनकी उपलब्धता के संकट का मुद्दा उठाने के बाद सोसायटी ने यह कदम उठाया। बताया जाता है कि समूची दिल्ली की रेड लाईट एरिया में हर महीने लगभग 12 लाख निरोध की जरूरत होती है।

अब मैं पहले आपको यह बता दूँ कि महिला आयोग का गठन क्यों और किसलिये हुआ था ताकि यह लेख भ्रामक व अश्लील न लगे। देश में महिलाओं को सशक्त बनाने, महिलाओं के हितों की देखभाल व उनका सरंक्षण करने, महिलाओं के प्रति भेदभावमूलक व्यवस्था खत्म करने, उनकी गरिमा व सम्मान सुनिाचित करने, महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों एवं अपराधों पर त्वरित कार्यवाही करने के लिये देश में महिला आयोग का गठन किया गया था; न कि उनके जिस्म को नोचने वालों के लिये निरोध उपलब्ध कराने के लिये। स्वाति मालीवाल ने डीएसएसीएस को लिखे पत्र में कहा, दिल्ली के जीबी रोड इलाके में अपने दौरे के दौरान मुझे मालूम हुआ कि सेक्स वर्कर्स को पिछले कई महीनों से सरकार की तरफ से निरोध नहीं मिल रहे हैं। अतः सरकार की तरफ से उन्हें 12 लाख निरोध मुफ्त दिये जायें। अब प्रश्न यह है कि गरीब जनता की कमाई को सरकार 12 लाख निरोध के रूप में अय्याशी के अड्डों पर मुफ्त क्यों दे रही है? आखिर सरकार कौन से बजट से रेड लाईट एरिया में अय्याशी के लिये यह सुविधा प्रदान कर रही है जबकि बगैर कानूनी मान्यता के पूरे देश में यह कारोबार धड़ल्ले से चल रहा है। कहीं महिला आयोग इस अवैध कार्य को प्रोत्साहित करने का कार्य तो नहीं कर रहा है? देश में आज कुल 11 सौ 70 रेड लाईट एरिया हैं जिनमें प्रतिवर्ष हजारों बच्चियों को इस कारोबार के लिये धकेल दिया जाता है। अब दूसरा प्रश्न यह है कि महिला आयोग का गठन महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा के लिये किया गया था न कि देह व्यापार को बढ़ावा देने कि लिये? महिला आयोग की अध्यक्ष को निरोध की कमी तो दिख गयी पर वहां जबरन देह व्यापार में धकेली गयी मासूम लड़कियां दिखाई नहीं दीं? क्या महिला आयोग 12 लाख निरोध वितरित कर 12 लाख बलात्कारियों को बुलावा नहीं भेज रहा है? चलो मेंने मान भी लिया कि महिला आयोग को इन देह व्यापार कर रही महिलाओं की चिंता है पर ये चिंता तब अच्छी लगती जब महिला आयोग इन नरक की जिन्दगी जी रही महिलाओं के रोजगार और पुनर्वास की व्यवस्था कर इन्हें समाज की गरिमामयी मुख्य धारा में जोड़ने का काम करता। न जाने हर साल वेश्यावृत्ति के नाम पर कितनी मासूमों को इस नरक में धकेल दिया जाता है, उनके धर्म परिवर्तन होते हैं। खाड़ी देशों में तस्करी के माध्यम से इन मासूसों को जिस्म नुचवाने के लिये भेजा जाता है। अच्छा होता यदि महिला आयोग उनके इस मौन दर्द को समझ पाता जो चंद सिक्कों की आड़ में उन्हें अपना तन इन सामाजिक कीड़ों के हवाले करना पड़ता है अर्थ लाभ के लिये स्थापित यौन संबध वेश्यावृति कहलाता है जिसमें भावनात्मक तत्व न के बराबर होता है । अच्छा तब होगा जब महिला आयोग इन महिलाओं की भावनाओं को समझकर उनके लिये कल्याण कारी कार्य करती जिससे समाज में उन्हें उचित स्थान मिले और महिला आयोग उन महिलाओं के उत्थान की बात करता जो पूर्वोत्तर राज्यों में डायन कहकर मार दी जाती हैं, उनके बारे में भी जिन्हें अंधविश्वास के नाम पर नग्न घुमाया जाता है। महिला आयोग का काम महिलाओं को शक्ति प्रदान करना है न की देश के लोगों का पैसा 12 लाख कंडोम पर खर्च कराकर अय्याशी को बढावा देना! क्या महिला आयोग पथ भ्रष्ट हो गया है, अपने देश व समाज की संस्कृति-संस्कारों को झुठलाना चाहता है या देश की युवा शक्ति को दिशा भ्रमित कर पाश्चात्य सभ्यता के वशीभूत करना चाहता है?

-सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

भागवत खण्डन

प्रश्न 1. महर्षि के जीवनचरित को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उन्होंने भागवत पुराण का बहुत खण्डन किया था। क्या इस विषय पर भी उन्होंने कोई ग्रन्थ लिखा है?

उत्तर : हां, उन्होंने 'भागवत-खण्डनम्' नामक ग्रन्थ लिखा था।

प्रश्न 2. यह खण्डन 'श्रीमद्भागवत' (वैष्णव सम्प्रदाय) के विषय में है अथवा 'देवी भागवत' विषय में?

उत्तर : यह 'भागवतम-खण्डनम्' नामक ग्रन्थ 'श्रीमद्भागवत' जो वैष्णव सम्प्रदाय का मुख्य ग्रन्थ है, उसके विषय में है।

प्रश्न 3. इस ग्रन्थ का क्या कोई अन्य नाम भी है?

उत्तर : वैष्ण व सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ होने से इसका दूसरा नाम 'वैष्णवमत खण्डन' भी है। पं. लेखराम जी ने इसका नाम 'भड़वाभागवत' एवं 'पाखण्डखण्डन' भी लिखा है।

प्रश्न 4. यह ग्रन्थ कितना बड़ा है?

उत्तर : यह एक छोटी सी पुस्तिका है, सात पृष्ठ की।

प्रश्न 5. इसकी रचना महर्षि ने कब की थी?

उत्तर : संवत् 1923 के आरम्भ में। यह महर्षि की दूसरी पुस्तक थी।

प्रश्न : 6. यह किस भाषा में है?

उत्तर : यह मूल पुस्तक सुन्दर संस्कृत भाषा में है। बाद में श्री युधिष्ठिर मीमांसक जी ने इसका हिन्दी भाषा में भी अनुवाद किया।

प्रश्न 7. क्या यह अभी उपलब्ध है?

उत्तर : हां, यह उपलब्ध है और ऋषि की उपलब्ध पुस्तकों में यह सर्वप्रथम रचित पुस्तक है।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

मुआना, भागखेड़ा, डाहौला और किनाना में आयोजित होंगे

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 2 से 4 अक्टूबर के मध्य गुरुकुल कालवा में आर्य वीर दल का विशिष्ट आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर सफलता के बाद पूर्वक सम्पन्न होने के बाद दिनांक 5 से 11 अक्टूबर तक मुआना, 12 से 18 अक्टूबर भागखेड़ा, 19 से 25 अक्टूबर डाहौला तथा 26 से 1 नवम्बर तक किनाना में सात दिवसीय आर्यवीर प्रशिक्षण शिविरों काआयोजन किया जा रहा है। प्रत्येक गांव में शनिवार व रविवार को भजनों का कार्यक्रम पं. रामनिवास आर्य व पं. सत्यपाल जी आयोजित करेंगे। सम्पर्क करें-

-यज्ञवीर आर्य, मण्डलपति,
मो. 09255935328

गौमांस खाने के समर्थन में दिए जा रहे कुतर्कों की समीक्षा

–डॉ. विवेक आर्य

दादरी ग्रेटर नोएडा के गांव में हुई घटना नि:संदेह रूप से निंदाजनक है। अगर गोहत्या हुई थी तो उसे प्रशासन द्वारा गोहत्या, धार्मिक सौहार्द एवं हिन्दुओं की भावनाओं को भड़काने के आरोप में कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए थी। यह घटना एक और तथ्य को सिद्ध करती है। जिस प्रकार से 1857 की प्रथम क्रान्ति गौहत्या के संवेदनशील मुद्दे से जुड़ी थी, उसी प्रकार से आज भी जुड़ी हैं। मगर इस देश का एक विशेष वर्ग हिन्दू समाज की इस भावना को न समझकर उलटे सीधे कुतर्क देकर उन्हें गलत सिद्ध करने का असफल प्रयास कर रहा हैं। एक अश्लील उपन्यास बेच कर पेट भरने वाली लेखिका शोभा डे हिन्दुओं को यह चुनौती दे रही है कि आज मैंने गौमांस खाया है। आओ मुझे मार कर दिखाओ। उन मोहतरमा ने यह नहीं पहचाना की हिन्दू समाज स्वभाव से सहिष्णु है। इसीलिए उनका धंधा पानी यहाँ पर चल रहा है। अगर उनमें हिम्मत है तो मुहम्मद साहिब का कार्टून बना कर दिखाएं। इसी देश के मुसलमान ISIS के समान चौराहे पर खड़ा करके सरेआम फाँसी लगाकर आपकी सेकुलरता को सिद्ध कर देंगे। कुक्कुरमुत्तों के समान गौमांस भक्षण के समर्थन में अनेक लेख अंग्रेजी मीडिया में प्रकाशित हो रहे हैं। जो अपने कुतर्कों से यह सिद्ध करना चाहते हैं की गौमांस खाना गलत नहीं हैं। इस लेख के माध्यम से हम तर्कपूर्वक इन कुतर्कों कि समीक्षा करेंगे।

कुतर्क नं. 1 गौमांस प्राचीन काल से खाया जाता है। हमारे धार्मिक ग्रन्थ इसका समर्थन करते हैं।

समीक्षा– वेदों में मांस भक्षण का स्पष्ट निषेध किया गया हैं। अनेक वेद मन्त्रों में स्पष्ट रूप से किसी भी प्राणि को मारकर खाने का स्पष्ट निषेध किया गया हैं। जैसे

हे मनुष्यों ! जो गौ आदि पशु हैं वे कभी भी हिंसा करने योग्य नहीं हैं – यजुर्वेद 1/1

जो लोग परमात्मा के सहचरी प्राणी मात्र को अपनी आत्मा का तुल्य जानते हैं अर्थात जैसे अपना हित चाहते हैं वैसे ही अन्यों में भी वर्तते हैं–यजुर्वेद 40/7

हे दांतों तुम चावल खाओ, जौ खाओ, उड़द खाओ और तिल खाओ। तुम्हारे लिए यही रमणीय भोज्य पदार्थो का भाग हैं । तुम किसी भी नर और मादा की कभी हिंसा मत करो।– अथर्ववेद 6/140/2

वह लोग जो नर और मादा, भ्रुण और अंड़ों के नाश से उपलब्ध हुए मांस को कच्चा या पकाकर खातें हैं, हमें उनका विरोध करना चाहिए– अथर्ववेद 8/6/23

निर्दोषों को मारना निश्चित ही महापाप है, हमारे गाय, घोड़े और पुरुषों को मत मार। –अथर्ववेद 10/1/29

इस प्रकार से अनेक प्रमाण वेदों में मांसाहार के विरुद्ध मिलते हैं। कुछ लोग जो प्रमाण मांसाहार विशेष रूप से गौमांस के समर्थन में देते हैं, वे वेदों के मन्त्रों की गलत व्याख्या निकालने के कारण हैं।

कुतर्क नं 2. गौ मांस गरीबों का प्रोटीन हैं। प्रतिबन्ध से उनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव होगा।

समीक्षा– एक किलो गौ मांस 150 से 200 रुपये में मिलता हैं जबकि इतने रुपये में 2 किलो दाल मिलती हैं। एक किलो गौमांस से केवल 4 व्यक्ति एक समय का भोजन कर सकते हैं जबकि 2 किलो दाल में कम से कम 16–20 आदमी एक साथ भोजन कर सकते हैं। मांस से मिलने वाले प्रोटीन से पेट के कैंसर से लेकर अनेक बीमारियां होने का खतरा हैं जबकि शाकाहारी भोजन प्राकृतिक होने के कारण स्वास्थ्य के अनुकूल हैं।

कुतर्क नं 3. गौ मांस पर प्रतिबन्ध अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हैं क्यूंकि यह उनके भोजन का प्रमुख भाग है।

समीक्षा– मनुष्य स्वाभाव से मांसाहारी नहीं अपितु शाकाहारी हैं। वह मांस से अधिक गौ का दूध ग्रहण करता है। इसलिए यह कहना की गौ का मांस भोजन का प्रमुख भाग हैं एक कुतर्क है। एक गौ अपने जीवन में दूध द्वारा हजारों मनुष्यों की सेवा करती हैं जबकि मनुष्य इतना बड़ा कृतध्नी हैं की उसे सम्मान देने के स्थान पर कसाइयों से कटवा डालता है।

कुतर्क नं 4. अगर गौ मांस पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो बूढ़ी एवं दूध न देनी वाली गौ जमीन पर उगने वाली सारी घास को खा जाएगी जिससे लोगों को घास भी नसीब न होगी।

समीक्षा– गौ घास खाने के साथ–साथ गोबर के रूप में प्राकृतिक खाद भी देती हैं जिससे जमीन की न केवल उर्वरा शक्ति बढ़ती हैं अपितु प्राकृतिक होने के कारण उसका कोई दुष्परिणाम नहीं है। प्राकृतिक गोबर की खाद डालने से न केवल धन बचता हैं अपितु उससे जमीन की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती हैं। साथ में ऐसी फसलों में कीड़ा भी कम लगता हैं जिनमें प्राकृतिक खाद का प्रयोग होता है। इस कारण से महंगे कीटनाशकों की भी बचत होती हैं। साथ में विदेश से महंगी रासनायिक खाद का आयात भी नहीं करना पड़ता। बूढ़ी एवं दूध न देनी वाली गौ को प्राकृतिक खाद के स्रोत्र के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

कुतर्क नं 5. गौहत्या पर प्रतिबन्ध अल्पसंख्यकों के अधिकारों का अतिक्रमण है।

समीक्षा– बहुसंख्यक के अधिकारों का भी कभी ख्याल रखा जाना चाहिए। इस देश में बहुसंख्यक भी रहते है। गौहत्या पर प्रतिबन्ध से अगर बहुसंख्यक समाज प्रसन्न होता हैं तो उसमें बुराई क्या है।

कुतर्क नं 6. गौहत्या करने वाले को 10 वर्ष की सजा का प्रावधान हैं जबकि बलात्कारी को 7 वर्ष का दंड है। क्या गौ एक नारी के शील से अधिक महत्वपूर्ण हो गई?

समाधान– हम तो बलात्कारी को उम्रकैद से लेकर फांसी की सजा देने की बात करते हैं। आप लोग ही कटोरा लेकर उनके लिए मानव अधिकार के नाम पर माँफी देने की बात करते हैं। सबसे अधिक मानव अधिकार के नाम पर रोना एवं फांसी पर प्रतिबन्ध की मांग आप सेक्युलर लोगों का सबसे बड़ा ड्रामा है।

कुतर्क नं 7. गौहत्या के व्यापर में हिन्दू भी शामिल है।

समाधान– गौहत्या करने वाला हत्यारा है। वह हिन्दू या मुसलमान नहीं है। पैसो के लालच में अपनी माँ को जो मार डाले वह हत्यारा या कातिल कहलाता हैं नाकि हिन्दू या मुस्लमान। सबसे अधिक गोमांस का निर्यात मुस्लिम देशों को होता हैं। इससे हमारे देश के बच्चे तो दूध के लिए तरस जाते हैं और हमारे यहाँ का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता हैं।

कुतर्क नं 8. अगर गौ से इतना ही प्रेम है तो उसे सड़कों पर क्यों छोड़ देते है।

समाधान– प्राचीन काल में राजा लोग गौ को संरक्षण देने के लिए गौशाला आदि का प्रबंध करते थे जबकि आज की सरकारे सहयोग के स्थान पर गौ मांस के निर्यात पर सब्सिडी देती है।

...शेष पेज 6 पर

संस्कृतम्

आर्याणां संस्कृतिः । (आर्य संस्कृतिः)

संस्करणं परिष्करणं संस्कृतिः भवति। सा संस्कृतिः कथ्यते या दुर्गुणान् दुर्व्यसनानि पापानि पापभावनाश्च हृदयेभ्यो निस्सार्य हृदयानि निष्पापानि निर्मलानि सत्त्वभावोपेतानि च करोति। प्राचीनानाम् आर्याणां संस्कृतेः एता एव विशेषताः सन्ति। तेषां संस्कृतिः मनुष्यान् सर्वविधपापेभ्यो निवारयति, तान् सन्मार्गमुपनयति, तेषां हृदयेषु सत्यस्य अहिंसायाः धर्मस्य दयायाः परोपकारस्य धैर्यस्य त्यागस्य शीलस्य सहानुभूतेः दानादिगुणानां च स्थापनां करोति।

आर्य संस्कृतेः विशेषगुणाः संक्षेपत एते सन्ति–

1.धर्मप्रधान्यम्–'यतोऽभ्युदायनिः श्रेयससिद्धि स धर्मः' इति लक्षणानुसारं यतो लौकिकं पारलौकिकं च कल्याणं भवति, तदेव कर्म कर्तव्यम्, नान्यत्। धर्म एवमनुष्येषु पशुभ्यो विशेषोऽस्ति, इति तेषा मतम्।

2. वर्णव्यवस्था–**ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूदाः** चत्वारो वर्णाः सन्ति। ते स्वं स्वं कर्म कुर्युः। वर्ण–व्यवस्था गुणकर्मानुसारम् आसीत्, न तु जन्ममात्रेण।

3. आश्रमव्यवस्था – ब्रह्मचर्यगृहस्थवानप्रस्थसंन्यासाः चत्वारः आश्रमाः सन्ति, ते सर्वैरपि पालनीयाः।

4. कर्मवादः – मनुष्यः स्वकर्मानुसारं फलं प्राप्नोति, पुण्यकर्मणा पापकर्मणा च पापम्। 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।' पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति पापः पापेनैवेति' (बृहदारण्यकम्)।

5. पुनर्जन्मवादः – मनुष्यस्य कर्मानुसारं पुनर्जन्म भवति। उक्तं च गीतायाम् – 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः, ध्रुवं जन्म मृतस्य च'।

6. मोक्षः – मनुष्यो ज्ञानग्निना सर्वकर्माणि प्रदह्य मोक्षं लभते। मोक्षप्राप्तौ जीवस्य पुनरावृत्तिर्न भवति। मोक्ष एव परमः पुरुषार्थः।

7. श्रुतीनां प्रामाण्यम् – वेदाः परमप्रभाणभूताः सन्ति। वेदोक्तमार्गेण सदा प्रवर्तितव्यम्।

8. यज्ञस्य महत्त्वम् – सर्वैर्मनुष्यैः पञ्च यज्ञा अवश्यं कार्याः।

9. अध्यात्मप्रवृत्ति – भौतिकवादं त्यक्त्वा अध्यात्मे प्रवृत्तिः कार्या।

10. त्यागः – जनः संसारे विषयेषु असक्तो भूत्वा कर्म कुर्यात्। यथा च गीतायां निष्कामकर्मयोगः प्रतिपादितः। उक्तं च वेदेऽपि 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।'

11. तपोमयं जीवनम्– मनुष्याणां जीवनं तपोमयं स्यात्, न तु भोगप्रधानम्।

12. तपोवनानां महत्त्वम् – मनुष्यो ब्रह्मचर्यवानप्रस्थसंन्यासाश्रमकाले तपोवनं सेवेत्

13. मातृपितृगुरुभक्तिः – 'मातृदेवो भव' 'पितृदेवो भव', 'आचार्य देवो भव' इति।

14. सत्यनिष्ठता– सत्यमेव ग्राह्यम्, नासत्यम्। 'सत्यमेव जयते नानृतम्' इति।

15. अहिंसापालनम्– 'अहिंसा परमो धर्मः' इति।

एतस्मात् स्पष्टमेतदस्ति यदार्यसंस्कृत्यैव विश्वस्य कल्याणं भवितुमर्हति।

साभार : रचनानुवादकौमुदी

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

दिल्ली में डेंगू जैसी भयानक बीमारी को खत्म करने के लिए विभिन्न जगहों पर रोग मुक्ति यज्ञ संपन्न

छोटे-छोटे बच्चों के मुख से गायत्री मंत्रों का उच्चारण व यज्ञ से सम्बन्धित मन्त्रों को सुनकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे मानो महर्षि की आत्मा इन नन्हें-नन्हें बालक-बालिकाओं के भीतर से प्रतिध्वनित हो रही हो।

यज्ञ के प्रति आस्था को लेकर इस सम्वाददाता ने यज्ञ के दौरान जब बच्चों से बातचीत की तो बच्चों का कहना था कि 'हवन से उठने वाला धुआं वातावरण को शुद्ध करता है जिससे हम बीमार नहीं होते, हमारा खून और हमारा घर साफ और पवित्र होता है।' जब महाशय जी के विषय में बच्चों से पूछा गया कि क्या आप महाशय धर्मपाल जी को जानते हैं तो उनका कहना था कि 'महाशय जी को हमने टी.वी. पर बहुत बार देखा है, एम.डी.एच. मसाले के विज्ञापन में वह कभी बग्घी पर आते हैं, कभी अपने परिवार के साथ खाने की मेज पर बैठे हुए दिखाई देते हैं। मुझे महाशय जी बहुत अच्छे लगते हैं।' बच्चों से बातचीत करते हुए जब यह पूछा गया कि क्या आप लोग बच्चों से मिलना चाहेंगे तो सारे बच्चों ने एक स्वर में हां कर दी।

आज की युवा पीढ़ी भी समाज में फैले पाखण्ड और जाति-भेद जैसी बुराइयों से छुटकारा पाना चाहती है और समाज में एकरूपता लाने की इच्छुक होती नजर आ रही है। ऐसे में महाशय जी और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाए जा रहे जनोपयोगी कार्यक्रमों से युवाओं में आर्य समाज के प्रति नवचेतना का संचार हो रहा है इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

बाहुबलि पार्क, सूरजमल विहार में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

डिस्ट्रीक्ट पार्क, प्रीत विहार में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

खजूरी खास, बिहारी कालोनी में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

भगौना गांव पार्क, नारायणा विहार में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

डी ब्लॉक पार्क इन्द्रपुरी में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

डी.डी.ए. सेंट्रल पार्क, दिलशाद गार्डन में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

डी.डी.ए. पार्क दयानन्द विहार कालोनी में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

कालकाजी में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

इन्द्रपुरी मेन पार्क में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

झुग्गी चूना भट्टी बहादुरगढ़ में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

केशव पार्क सरोजनी नगर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

एफ ब्लाक लक्ष्मी नगर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

मॉडल बस्ती में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

शिव मंदिर धर्मपुरा नजफगढ़ में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

राज नगर पालन कॉलोनी में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

मामूरपुर चौपाल, नरेला में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

सीनियर सिटीजन वैलफेयर, हरि कुंज में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

इन्द्रा पार्क, नजफगढ़ में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

सी.डी. ब्लॉक हरिनगर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

सेंट्रल पार्क बाली नगर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

चिल्ड्रन पार्क, एल ब्लॉक आनन्द विहार में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

द्वारका सैक्टर 23 में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

मस्जिद मोठ में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

शिव नगर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

मानसरोवर पार्क डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

डी.टी.सी. कालोनी शादीपुर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

मोहन गार्डन में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

तिलक नगर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

त्रिलोकपुरी में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

रघुनगर में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

हनुमान रोड में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

मानकपुर पाठशाला मॉडल बस्ती में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

तुलसी गार्डन नारायणा विहार में डेंगू निवारण यज्ञ आयोजित।

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

Gifts of Water

"The swift-moving cloudy winds, the dispensers of waters, are a group of horses, they deck themselves like youths enjoying a festival; they are charming as innocent children in the precinctsof their own dwelling. They are frolicsome like calves."

"May the great rivers, with their mighty roar, and with waves of pure water, come hither for our sustenance. May these motherly rivers, divine and inspiring, grant us their water which is rich in sweetness as honey and nourishing as milk."

"O waters, bring to perfection all disease-dispelling medicaments for the upkeep of my body so that I may live long to see the bright sun."

अत्यासो न ये मरुतः स्वञ्चो यक्षदृशो न शुभयन्त मर्याः। ते हर्म्येष्ठाः शिशवो न शुभ्रा वत्सासो न प्रक्रीलिनः पयोधाः।।(Rv.Vii.56.16)

सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिर्महो महीरवसा यन्तु वक्षणीः।

देवी रापो मातरः सूदयित्व्नो घृतवत्पयो मधुमन्नो अर्चत।। (Rv.x.64.9)

आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वेऽमम। ज्योक् च सूर्यं दृशे।। (Rv.i.23.21)

Atyaso na ye marutah svanco yaksadrso na subhayanta maryah.

te harmyesthah sisavo na subhra vatsaso na prakrilinah payodhah..

Serasvati sarayuh sindhur urmibhir maho mahir avasa yantu vaksanih.

devir apo matarah sudayitnvo ghrtavat payo madhuman no arcata..

Apah prnita bhesajam varutham tanve mama.

jyok ca slryam drse..

The Divine Voice

Speech is a unique privilege of man. Surely, only man communicates his feelings and desires by means of language comprising meaningful sounds. The eternal divine sounds derive their intent from the mode of their pronunciation in human mouth. The fabric of Vedic text is woven with such luminous sounds which conjoin to produce words and verses in the revealed knowledge. The wise sages follow the path of knowing the secrets of speech by the spirit of intuition and sacrifice.

The verse states "O Lord of the vast Universe, verily, that is the best part of the divine speech which for the first time has given names to the objects and which has been uttered in the very beginning. She is revealed through those earliest sages who are best among men, devoid of all sins. The divine words are revealed in their hearts secretly with your love and blessings." The first group of men found themselves surrounded by unfamillar ovjects and veings, which had no names then. They ascribed meaningful names through the revealed words. 'Having acquired the knowledge, they dispersed the same to others', reveals a successive verse. The divine words deliver her secret just as a loving wife, well attired, presents herself to her husband.

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः।

यदेषा श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः।। (Rv.x.71.1)

Brhaspate prathamarn vaco agram yat prairata namadheyam dadhanah.

yad esam srestham yad aripram asit prena tad esam nihitam guhavih..

Bliss and Sustenance

"O divine Bliss and Sustenance, both of you are the generators of wealth; as soon as born, you are the guardians of the entire world. You are the source of immortality and inspirer of the bounties of Nature."

"Nature's bounties have been propitiating these two divinities of Bliss and Sustenance from the beginning of the creation, thereby driving away the disagreeable gloom. With these two, the resplendent lord generates the mature milk in the immature heifers."

"One of them, Bliss, has taken his seat high in heaven, while the other, Sustenance, has done so on earth and in the mid-air. May the two grant us the much desired abundance of riches and ever be the great source of enjoyment to us."

सोमापूषणा जनना रयीणां जनना दिवो जनना पृथिव्याः।

जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम्।।

इमौ देवौ जायमानौ जुषन्तेमौ तमांसिगूहतामजुष्टा।

आभ्यामिन्द्रः पक्वमामास्वन्तः सोमापूषभ्यां जनदुस्रियासु।।

दिव्यन्यः सदनं चक्र उच्चा पृथिव्यामन्यो अध्यन्तरिक्षे।

तावस्मभ्यं पुरुवारं पुरुक्षुं रायस्पोषं वि ष्यतां नाभिमस्मे।। (Rv.II.40.1-2-4)

Somaplisana janana rayinarn janana divo janana prthivyah.

Jatau visvasya bhuvanasya gopau deva akrnvann amrtasya nabhim..

Imau devau jayamanau jusantemau tamarisi guhatam ajusta.

abhayam indrah pakvam amasv antah somapisabhy arn janad usriyasu..

Divyanyah sadanarn cakra ucca prthivyam anyo adhy antarikse.

tav asmabyam puruvaram puruksurn rayas posam vi syatam nabhirh asme..

To Be Continued...

पृष्ठ 1 का शेष

क्या सियासत ...

मीडिया मौन साधकर बैठ गयी थी किन्तु आज राजनेता और मीडिया दोनों ने मिलकर अनूठा विलाप किया जिससे पूरा देश चकित है कि क्या यह इतना शोर एक मुस्लिम की हत्या पर है या एक अल्पसंख्यक की हत्या पर ? यदि मुस्लिम की हत्या पर है तो में आपको बता दूँ कि सीरिया में सैकड़ों लोग रोजाना आतंकियों की गोली का शिकार होकर दफन हो रहे हैं। उनके लिये यही समाज सांत्वना क्यों नहीं दिखाता ? दूसरा यदि वह अल्पसंख्यक समुदाय से हैं तो शायद सिखों की संख्या मुस्लिमों से कम है तब उनके लिये यह मुआवजा और सांत्वना आखिर क्यों नहीं दिखायी दी थी।

इस मामले में उत्तर प्रदेश सरकार ने जो त्वरित कार्यवाही की वह प्रशंसनीय है किन्तु यह प्रशासनिक कार्यवाही यदि 'कवाल' में सचिन, गौरव की हत्या पर होती तो शायद मुजफ्फर नगर दंगे का दंश लोगों को नहीं झेलना पड़ता। खैर बात गौमांस भक्षण की है। हदीस कहती है, 'कि गाय के दूध में शिफा है, इसका मक्खन दवा है और इसका मांस नहीं खाना चाहिए लेकिन भारत की सेक्यूलर जमात इस मामले पर राजनीति करने उतर गयी।

कुछ लोगों ने ट्वीट भी किये प्रख्यात लेखिका शोभा डे ने कहा ''मैं बीफ खा रही हूँ हिम्मत हैं तो मुझे मारो'' अब इस सारे मामले को देखकर समझ आता है कि इन लोगों को रोकना बड़ा मुश्किल है क्योंकि समझदार को समझाने की जरुरत नही और मूर्खो को यह बताना कि गाय का दूध अमृत और मांस विष के समान है तो कोई मानेगा नहीं अतः इसके लिये सरकार को तुरन्त कड़ा कानून बनाना चाहिये। राजनैतिक दलों को समझना होगा कि राजनीति की भेंट गौ माता को न चढ़ायें।

मेडिकल चिकित्सा कहती है चाकू से हाथ कट जाये तो कई दिनों तक उसकी मरहम पट्टी की जानी चाहिए पर हम कहते ऐसे हालात ही क्यों पैदा किये जाये कि हाथ कटे और मरहम पट्टी की जरूरत पड़े। लेकिन राजनेताओं की दुकान तो सांत्वना की मरहम और मुआवजे की पट्टी से चलती आयी है। इखलाक के परिजनों को सरकार व अन्य अलग-अलग राजनैतिक दलों से करीब 45 लाख रुपये की आर्थिक सहायता दे दी गयी जबकि हाल ही में मेरठ में सेना के एक जवान को कुछ लोगों इस वजह से पीट-पीट कर मार डाला था क्योंकि उसने लड़कियों को छेड़ने वालों को रोकने की कोशिश की थी। उसकी सच्चाई को मीडिया ने भी छिपाया और सरकार की ओर से न तो सांत्वना के स्वर फूटे और न उसके परिवारजनों को कोई भारी-भरकम मुआवजा ही दिया गया जिस तरह इखलाक के परिवारजनों को दिया गया। अब प्रश्न ये है कि देश के लिये जान देने वाले जवान के परिजनों को 10 लाख मिलते हैं और अल्पसंख्यक के नाम पर लाखों रुपया अतिरिक्त सरकार लुटा देती है अब देश के राजनेताओं और मीडिया को जनता को यह भी बताना होगा सरहद और बहन-बेटी की रक्षा करते हुए शहीद होना ठीक है या गौ मांस खाकर!

-राजीव चौधरी

पृष्ठ 3 का शेष

गौमांस खाने के ...

विडंबना देखिये मुर्दो के लिए बड़े बड़े कब्रिस्तान बनाने एवं उनकी चारदीवारी करने के लिए सरकार अनुदान देती हैं जबकि जीवित गौ के लिए गौचर भूमि एवं चारा तक उपलब्ध नहीं करवाती। अगर हर शहर के समीप गौचर की भूमि एवं चारा उपलब्ध करवाया जाये तो कोई भी गौ सड़कों पर न घूमे। खेद हैं हमारे देश में अल्पसंख्यकों को लुभाने के चक्कर में मुर्दो की गौ माता से ज्यादा औकाद बना दी गई है।

कुतर्क नं 9. गौ पालन से ग्रीन हाउस गैस निकलती है जिससे पर्यावरण की हानि होती हैं।

समाधान- यह वैज्ञानिक तथ्य हैं की मांस भक्षण के लिए लाखों लीटर पानी बर्बाद होता हैं जिससे पर्यावरण की हानि होती है। साथ में पशुओं को मांस के लिए मोटा करने के चक्कर में बड़ी मात्र में तिलहन खिलाया जाता हैं जिससे खाद्य पदार्थों को अनुचित दोहन होता है। शाकाहार पर्यावरण के अनुकूल हैं और मांसाहार पर्यावरण के प्रतिकूल हैं। कभी पर्यावरण वैज्ञानिकों का कथन भी पढ़ लिया करो।

कुतर्क नं 10. गौमांस पर प्रतिबन्ध भोजन की स्वतंत्रता पर आघात हैं।

समाधान- मनुष्य कर्म करने के लिए स्वतंत्रता हैं मगर सामाजिक नियम का पालन करने के लिए परतंत्र है। एक उदहारण लीजिये आप सड़क पर जब कार चलाते हैं तब आप यातायात के सभी नियमों का पालन करते हैं अन्यथा दुर्घटना हो जाएगी। आप कभी कार को उलटी दिशा में नहीं चलाते और न ही कहीं पर भी रोक देते हैं अन्यथा यातायात रुक जायेगा। यह नियम पालन मनुष्य की स्वतंत्रता पर आघात नहीं हैं अपितु समाज के कल्याण का मार्ग है। इसी नियम से भोजन की स्वतंत्रता का अर्थ दूसरे व्यक्ति की मान्यताओं को समुचित सम्मान देते हुए भोजन ग्रहण करना है। जिस कार्य से समाज में दूरियां, मनमुटाव, तनाव आदि पैदा हो उस कार्य को समाज हित में न करना चाहिये।

कुतर्क नं 11. महाराष्ट्र में गौ हत्या पर पाबन्दी लगा दी गई। इससे 1.5 लाख व्यक्ति बेरोजगार हो जायेगे जो मांस व्यापर से जुड़े हैं।

समीक्षा- गौ पालन भी अच्छा व्यवसाय हैं। इससे न केवल गौ का रक्षण होगा अपितु पीने के लिए जनता को लाभकारी दूध भी मिलेगा। ये व्यक्ति गौ पालन को अपना व्यवसाय बना सकते हैं। इससे न केवल धार्मिक सौहार्द बढ़ेगा अपितु सभी का कल्याण होगा।

12वें आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन हेतु अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

परिचय सम्मेलन दिनांक 6 दिसम्बर 2015 आर्य समाज 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में आयोजित होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक -युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं जिसमें बहुत से आर्य परिवारों ने इन सम्मेलनों का लाभ उठाते हुए अपने बच्चों के विवाह संस्कार करवाये हैं। हम आपसे आशा के साथ प्रार्थना कर रहे हैं कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर 12वें आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करें। यह सम्मेलन 6 दिसम्बर 2015 को आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001 में प्रात: 10 बजे होना निश्चित हुआ है। आप अपने फार्म भरकर 20 नवम्बर तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में भेज सकते हैं। आप इस फार्म को सभा की वेब साईट www.thearyasamaj.org/aryasandesh से डाउन लोड भी कर सकते हैं। फार्म की छाया प्रति भी मान्य होगी। इस सम्मेलन से जहां महर्षि दयानन्द जी के कथनानुसार ''युवक-युवती अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार ही परस्पर विवाह करें'' का यह कदम आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा वहीं पर आर्य परिवारों एवं युवा पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने का भी एक महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होगा। फार्म का नमूना नीचे प्रकाशित है।

: निवेदक :

प्रकाश आर्य	**विनय आर्य**	**अर्जुन देव चड्ढ़ा**	**एस.पी.सिंह,**
मंत्री	महामंत्री	राष्ट्रीय संयोजक	संयोजक दिल्ली राज्य
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**	**आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन**	
मो. 09826655117	मो. 09958174441	मो. 09414187428	मो. 09540040324

: प्रांतीय संयोजक :

गुजरात, सुरेश चन्द्र अग्रवाल-09824072509; राजस्थान, अमरमुनि -09214586018; उत्तर प्रदेश, डॉ. अशोक आर्य -09412139333; आन्ध्र प्रदेश, डॉ. धर्मतेजा-09848822381, छत्तीसगढ़, दीनानाथ वर्मा -09826363578; महाराष्ट्र, डॉ. ब्रह्ममुनि -09421951904; उत्तराखण्ड, विनय विद्यालंकार-09412042430; विदर्भ, कृष्ण कुमार शास्त्री- 09579768015; जम्मू-कश्मीर, राकेश चौहान- 09419206881; हरियाणा, कन्हैयालाल आर्य-09911179073, हिमाचल प्रदेश, रामफल आर्य-09418277714; ओडिशा, स्वामी सुधानन्द-0986133060; मध्य भारत, डॉ. दक्षदेव गौड़-09425907070; पंजाब, दिनेश शर्मा-09872880807; महिला संयोजिका, वीना आर्या- 09810061263; रश्मि वर्मा- 09971045191; विभा आर्या-09873054398

आर्ष गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम नोएडा -33 में श्रावणी महोत्सव चतुर्वेदशतक पारायण एवं उपनयन संस्कार

दिनांक 23-9-2015, आर्य समाज आर्ष गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम नोएडा -33 में श्रावणी महोत्सव चतुर्वेदशतक पारायण एवं नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल हरिपुर में श्रावणी उपाकर्म व षष्ठ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

दिनांक 29 अगस्त से 12 सितम्बर 2015 के मध्य नुआपड़ा जिला स्थित गुरुकुल हरिपुर, जुनानी में श्रावणी पर्व के अवसर पर गुरुकुल में नूतन प्रविष्ट 30 ब्रह्मचारियों का उपनयन, वेदारम्भ संस्कार तथा पूजा की वास्तविकता एवं बोलबम की निरर्थकता से सम्बधित शिक्षाप्रद सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें पन्द्रह दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री ए.बी. स्वामी राज्यसभा सांसद, श्री बसन्त कुमार पण्डा विधायक, नुआपड़ा श्री प्रदीप कुमार नायक, मुख्य अभियन्ता बिजली विभाग नुआपड़ा, श्री प्रसन्न कुमार पाढ़ी, श्री बी.जे.डी. अध्यक्ष नुआपड़ा, श्री घासीराम माझी परिषद सदस्य खरियार, श्री सरोज कुमार साहू उपाध्यक्ष ओड़िशा क्रिकेट एसोसियेशन, श्री विनोद कुमार जायसवाल, समाजसेवी रायपुर(छ.ग.) इत्यादि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। समस्त कार्यक्रम डॉ. सुदर्शन देव आचार्य जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

-आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म्।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

12 वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959,
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :.....गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....समय :.....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई.....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/ पता .....
..... मासिक आय .....

: पारिवारिक विवरण :

6. पिता/संरक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता: .....
दूरभाष :..... मोबा :..... ईमेल: .....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई: विवाहित ..... अविवाहित: ..... बहन : विवाहित ..... अविवाहित :.....
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? .....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/ युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✔) लगाएं : विधुर :☐ विधवा:☐ तलाकशुदा:☐ विकलांग:☐
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें:.....

दिनांक : ..... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट:1. कृपया इस फार्म के साथ निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क रु. 300/- का ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भेजें अथवा **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि** सभा के नाम **एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें।

नई दिल्ली 6 दिसम्बर 2015

परिचय सम्मेलन 6 दिसम्बर 2015 आर्य समाज, हनुमान रोड़-15, नई दिल्ली-110001 में आयोजित किया जाएगा। विशेष जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा (9414187428) अथवा दिल्ली संयोजक श्री एस. पी. सिंह (9540040324) से सम्पर्क करें।

2. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क में 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
5. पंजीकरण की अन्तिम तिथि 20 नवम्बर 2015 है। कृपया सुनिश्चत करें कि आपका फार्म 20 नवम्बर 2015 की सायंकाल तक सम्मेलन कार्यालय में अवश्य पहुंच जाए। इसके बाद प्राप्त होने वाले आवेदनों को तत्काल पंजीकरण के रूप में स्वीकार किया जाएगा तथा उनका विवरण सम्मेलन के बाद में प्रकाशित होने वाली विवरणिका में ही सम्मिलित होगा।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। **कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं होगा।**

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें - *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

5 अक्टूबर से 11 अक्टूबर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 08 अक्टूबर/ 09 अक्टूबर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 7 अक्टूबर, 2015

स्वास्थ्य चर्चा

दमा स्वांस के लिए-

1. हीराकसीस चने बराबर पानी से लें।
2. अपामार्ग के बीज चिलम में रख आंच गेर कर इसका धुआं पीयें।
3. रीठे की गिरी 20 ग्राम कूट छान एक-एक ग्राम पानी से प्रात: लें।
4. सुहागा भुना 75 ग्राम पीस शहद में मिलाकर सोते समय रात को एक छोटी चम्मच लें।
5. अजवायन अर्क आधा कप इसमें इतना ही पानी गेर कर दोनों समय भोजन के बाद लें।

दांत साफ और चमकदार बनें-

1. मसूर की दाल जला कर पीस कर मंजन करें।
2. कीकर का कोयला 50 ग्राम फिटकरी भूनी 20 ग्राम नमक लाहौरी (सेंधा) 10 ग्राम पीस कपड़ छानकर मंजन करें।

दांत में ठंडा पानी लगना-

1. सौंठ 20 ग्राम दरदरा कूट कर 200 ग्राम पानी में गेर कर उबालें। आधा रह जाने पर छानकर कम गर्म पानी से कुल्ला करें।

हिलते दांत मजबूत हों

1.मोलसरी की छाल 50 ग्राम कूट छान कर इसमें नमक 25 ग्राम मिलाकर दातों पर मंजन करें।

2. सहचरादि तेल को प्रात: सायं मसूड़ों पर मलने से दांत मजबूत हो जाते हैं।

साभार-वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद''

-यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में भी उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली-110001 के पते पर भेज सकते हैं।

प्रतिष्ठा में,

आवश्यकता है

भारत के प्रत्येक जिले में कम से कम एक शुद्धि सभा का प्रचारक शुद्धि कार्य के लिए नियुक्त करना है। जो व्यक्ति यज्ञ आदि करवा सकते हैं और जिनको वैदिक धर्म को आगे बढ़ाने में रुचि है वह अपना बायोडाटा निम्न पते पर भेजें। विशेषत: यह भी उल्लेख करें कि वह किस जिले में कार्य करना चाहते हैं। योग्यतानुसार शुद्धि सभा की ओर से मानदेय दिया जायेगा व शुद्धि कार्य के लिए आने-जाने का मार्ग व्यय भी अलग से दिया जाएगा।

एवं

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा नई दिल्ली कार्यालय के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो सुबह 10.00 से दोपहर 1.00 बजे के मध्य डाक लेना, टेलिफोन सुनना, अकाऊंटस और कम्प्यूटर टाईपिंग का काम जानता हो। योग्यता अनुसार मानदेय दिया जाएगा। **संपर्क करें-**

पता: श्री चतर सिंह नागर, मंत्री, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, शुद्धि सभा भवन, 6949, बिड़ला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली-110007

चुनाव समाचार

आर्य समाज वेद मन्दिर, पीतमपुरा, दिल्ली

प्रधान - **श्री ब्रतपाल भगत**

मंत्री - **श्री सोहन लाल आर्य**

कोषाध्यक्ष - **श्री राकेश ठुकराल**

वधू चाहिए

हैदराबाद के हाईटेकसिटी में कार्यरत 34 वर्षीय विकलांग सीनियर साफ्टवेयर इंजीनियर को 24 से 28 वर्षीय कम से कम 10वीं तक शिक्षित, वैदिक संस्कृति-संस्कार युक्त, सौम्य तथा प्रशांत प्रवृत्ति युक्त एवं शुद्ध शाकाहारी, गरीब परिवार की या अनाथाश्रम में रहने वाली या कन्या गुरुकुल में पढ़ने वाली वधु चाहिए।जात-पात का कोई बन्धन नहीं। गुण-कर्म-स्वभाव को ही प्राथमिकता दी जाएगी। **सम्पर्क करें** - **मो. 08142772392, 09885667682**

गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् का द्वितीय वार्षिकोत्सव कार्यक्रम-विवरणम्

1. ब्रह्मसत्र-महायाग:	03.00-04.00
2. प्रणव-ध्वजोत्तोलनम्	04.00-04.30
3. देव-वेदि-समारोहणम्	04.30-05.00
4. स्वागत-वन्दनाभिनन्दनम्	05.00-05.30
5. संस्कृत-कुल-प्रस्तुति:	05 30-06.30
6. धन्यवाद-कृतज्ञता-ज्ञापनम्	06.30-07.00
7. शान्ति-मन्त्र-माचनम्	
8. ऋषि-अन्नादनम्	07.00

SUITABLE MATCH

Suitable match for Punjabi Rajput handsum, fair non-manglik boy 5'-10", 07-07-1975, 23.45 hrs. Delhi; B.Com (D.U.) and Professional Trainings. Own well settled electronic business with brother, a Pvt.Ltd. Company. Income 6lacs p.a, own house. Seeks qualified working/non-working girl from cultured & respectable family. No dowry.Mail girl's profile & photo at **"deep5914@gmail.com"** **9212326285, 9810414037.**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह